प्राक्कथन

आप, हम प्रायः सभी अपने उद्योग-व्यापार में कार्यरत रहते हैं। समाज का स्मरण तो सगाई-विवाह, चातुर्मास जैसे सामाजिक एवम् धार्मिक प्रसंगों पर ही हो आता है। फिर जैसे हमें कुछ याद ही नहीं रहता इस नये विषय की प्रेरणा मुझे श्री.चञ्चलमल लोढ़ाजी से ही मिली। यही एक भूमिका इस प्रयास का अधिष्ठान है। शास्त्र और तन्त्र के प्रभाव से समूचा विश्व जैसे एक छोटा गाँव-सा बन गया है। तन्त्रज्ञान के बल पर हम कम समय में सम्पर्क कर निकटता का अनुभव कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त क्या हम यह कह सकते हैं, कि हृदय और मस्तिष्क से भी हम अधिक निकट आ गए हैं? क्या हमने आपसी प्रेम सद्भाव के अनुभव का आनन्द लिया है, या ले रहे हैं? मेरे विचार से, हम यह नहीं कर पा रहे हैं।

प्रस्तुत विमोचन एक अल्प-सा प्रयास है इस दिशा में, कि अधिकतम चोरड़िया परिवार भाईचारे की भावना से संगठित हों, ताकि हम लक्ष्य-प्राप्ति की ओर बढ़ सकें।

इसका क्या परिणाम होगा या इसका हम क्या उपयोग कर पाएंगे, यह पूर्व सूचनीय नहीं है! इसी धारणा के साथ कि यह प्रयास अपने आप में उपयुक्त है, यह पुस्तिका आपके हाथों सौंपने में मुझे अपार हर्ष हो रहा है! इस आयोजन के मुख्य उद्देश्य हैं :

(१) चोरड़िया भाईचारे के इतिहास की छान-बीन कर, महत्वपूर्ण संग्रह का निर्माण। (२) चोरड़िया एवं सहगोत्रों का संगठन कर भारतभर शाखाएँ स्थापित करना। भाईचारे के मान्यवर व्यक्तियों को परिचित कराना।

(३) विभिन्न स्थानों में भिन्न व्यावसायिक चोरड़िया भाईचारे के लोगों को आपसी जानकारी व सहायता का अवसर उपलब्ध कराना। (४) भाईचारे की साझी समस्याओं का हल हम सभी को एक होकर खोजना है। (५) जो भाई शाखाएँ टालना चाहते हैं, उनके लिए संकलित सूचना की प्रस्तुति।

भाई चञ्चलमलजी के असीम कष्ट के कारण ही यह कठिन कार्य पूर्णता की राह देख पाया है। परिचय पत्रों में से ९०% तो उन्होंने स्वयं एकत्रित किए हैं। शेष एकत्रित करने में श्री.चन्द्रकान्त चोरड़िया जलगाँव, श्री.सोहनलालजी गादिया चैन्नई का ऋणनिर्देश करना अनिवार्य है। प्रस्तुत निर्देशिका में त्रुटियाँ तो हो सकती हैं। समस्त चोरड़िया भाई इस विषय की ओर प्रेमभाव से देख उसे परिपूर्ण करने में सहायता करें, तो ही भविष्य में यह प्रयास समग्रता के साथ आपके हाथों में आ सकता है।

आपसे निवेदन है कि परिचय-पत्र पूर्ण रूप से भरने और त्रुटियों को सुधारने में अपना सहयोग दें। एक चोरड़िया महासम्मेलन का आयोजन कर उसमें चोरड़िया महासंघ का निर्माण करने हेतु भी विचार-विमर्श करना है। मुझे आशा है इस माध्यम से हम और भी पास आ सकेंगे। आपके सहयोग की आशा एवं प्रतीक्षा में...

-भवरलाल जैन (चोरड़िया)

लोढा कुलभूषण, श्री.चञ्चलमल-एक व्यक्तित्व

राजस्थान की भूमि अपनी वीरता एवं पराक्रम के लिए सदा से प्रसिद्ध रही है। इस धरती ने अनगिनत कर्मयोगियों को जन्म दिया है। श्री. चञ्चलमल लोढ़ा भी इसी धरती के एक सपूत हैं, जिन्होंने ओसवाल वंश के इतिहास को एक नया आकार दिया है। श्री. लोढ़ा ने समस्त लोढ़ा बन्धुओं को संगठित करने हेतु भारत के गाँव-गाँव और नगर-नगर में जा कर वर्ष १९८५, १९९२ एवं १९९६ लोढ़ा गोत्र की तीन निर्देशिकाओं का संकलन एवं सम्पादन कर उन्हें मूर्त स्वरूप दिया।

इतिहास को समाज की आधारशिला माना जाता है। ओसवाल बन्धुओं की अपने ही इतिहास से अनभिज्ञता श्री. लोढ़ा के मन को हमेशा से ही कचोटती रही।

समाज को इसी ऐतिहासिक जानकारी देने के कठिन कार्य का बीड़ा उठाते हुए उन्होंने www.oswals.net का भी निर्माण किया जिसमें ओसवाल इतिहास, कुलदेवियों की जानकारी के अतिरिक्त पर्याप्त सामग्री है। 'ओसवाल वंश की कुलदेवियाँ' पुस्तक के रूप में श्री. लोढ़ा ने ओसवाल समाज को एक ऐसा दुर्लभ एवं अद्वितीय संग्रह प्रदान किया है, जिसके लिये वे समाज के दिलों में सदैव ही अमर रहेंगे। जीवन की लम्बी यात्रा में विभिन्न महानुभावों से मेरा परिचय हुआ। विचार विनिमय और साथ ही दृढ़ सम्बन्ध भी स्थापित हुए।

श्री. चञ्चलमलजी से जब मैं परिचित हुआ, तब मुझे एक अनूठे भाव-भेद की अनुभूति हुई। इस आयु में आज भी, यह धुनी आत्मा निस्सीम समाजसेवा की आराधना में निरन्तर लगी हुई है। जब मैंने यह जाना कि उन्होंने कठोर परिश्रमों के बल पर लोढ़ा भ्रातृत्व की निर्देशिका प्रकाशित की है, तो मेरे दिल में एक भावना जागृत हुई, कि क्यों न मैं इनसे अनुरोध करूँ ताकि वे चोरड़िया भ्रातृत्व की निर्देशिका भी तैयार करें।

आरम्भ में तो सकुचाते हुए मैंने प्रश्न के स्वरूप में इस प्रस्ताव को उनके सम्मुख रखा, किन्तु इस विषय पर उनका अनुक्रियाशील उत्तर एवं प्रतिक्रिया इतनी उत्स्फूर्त और उत्साहपूर्ण थी, कि मैं आश्चर्यचकित् रह गया। फिर मैंने उनसे ऐसा अनुरोध किया कि इस अभिनव कार्य के लिए उन्हें मानदेय (ऑनररियम) स्वीकार करना पड़ेगा। तब वह बोले, ''यह आप क्या कह रहे हैं? यह समाज का काम है। मैं समाज की सेवा में समर्पित हूँ। मैं इस काम को अवश्य पूर्ण करूँगा... किन्तु एक बात है कि मैं कोई पारिश्रमिक नहीं लूँगा-बल्कि आने-जाने के लिए, यात्राखर्च, डाकखर्च इत्यादि मैं अपनी ओर से ही करूँगा।''

क्या कहूँ मैं ऐसे व्यक्ति के बारे में, जो इस युग में अपने आप में एक देवदूत के स्वरूप में जीवन बिता रहा है। श्री. लोढ़ा ने गाँव-गाँव, घर-घर जा कर इस निर्देशिका की सामग्री संग्रहित की जो आपके सम्मुख प्रस्तुत है, इसे मूर्त रूप प्रदान करने का पूर्ण श्रेय मात्र इन्हीं को है। आप सभी भाई श्री.चञ्चलमलजी की दीर्घायु एवं अच्छे स्वास्थ्य के लिए परमात्मा से प्रार्थना करेंगे, ऐसा मुझे पूरा विश्वास है!

और तो हम उन्हें क्या दे सकते हैं?

-भवरलाल जैन (चोरड़िया)